TEACHERS OF BIHAR

दैनिक ज्ञानकोश

सीखें-सिखाएं, बिहार को आगे बढ़ायें

teachersofbihar@gmail.com
https://twitter.com/teachersofbihar
https://www.youtube.com/c/teachersofbihar
https://www.facebook.com/teachersofbihar
https://www.linkedin.com/company/teachersofbihar
www.teachersofbihar.org

2024

Teachers of Bihar

The change makers

दिवस ज्ञान

शशिधर उज्जवल

13 अप्रैल

1. **जालियांवाला बाग हत्याकांड–** 1919 में समस्त भारत में महात्मा गांधी के नेतृत्व में रॉलेट एक्ट का विरोध हो रहा था। पंजाब में रॉलेट एक्ट के विरोध का नेतृत्व दो लोकप्रिय नेता डॉ0 सत्यपाल एवं सैफुद्दीन किचलू द्वारा किया जा रहा था। इन दोनों नेताओं को 9 अप्रैल, 1919 ई. को बिना किसी कारण के गिरफ्तार कर नजरबंद कर दिया गया। अपने प्रिय नेताओं के गिरफ्तारी के विरोध में 13 अप्रैल, 1919 ई. को (वैसाखी के दिन) अमृतसर के जालियांवाला बाग में एक जनसभा का आयोजन किया गया था। इस आक्रोश को दबाने के लिए जालंधर के ब्रिगेडियर जनरल रेजीनाल्ड एडवर्ड हैरी डायर अपने 150 गोरखा ब्रिटिश सैनिकों के साथ पहुँचा। सभा को गैर–कानूनी घोषित किया। इस निहत्थी भीड़ पर डायर ने बिना पूर्व चेतावनी के गोली चलाने का आदेश दे दिया। गोलियों की वर्षा तब तक होती रही जब तक कि वे समाप्त नहीं हो गई। सरकारी दस्तावेजों के अनुसार 1650 राउंड गोलियां चलीं, 1516 घायल हुए जबकि 379 व्यक्ति मारे गये (अनाधिकृत तौर पर 1000 से अधिक व्यक्ति मारे गये तथा 3000 से अधिक व्यक्ति घायल हुए)। इस हत्याकांड के विरोध में रवीन्द्रनाथ टैगोर ने ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रदान की गयी 'नाइटहुड' / 'सर' की उपाधि 30 मई 1919 को तत्कालीन वायसराय चेम्सफोर्ड को यह कहते हुए वापस कर दिया था कि 'दुःख की इस घड़ी में अलंकार विहीन होकर मैं अपने देशवासियों के साथ खड़ा रहना चाहता हुँ।' सरकार ने हत्याकांड की जाँच के लिए 1 अक्टूबर, 1919 ई. को हंटर समिति का गठन किया। रिर्पोट में डायर की निन्दा की गयी। डायर को उसके पद से हटा दिया गया फिर भी ब्रिटेन में उसे 'ब्रिटिश साम्राज्य का शेर' उपाधि दी गई। इस घटना का जख्म सिक्ख युवाओं के जेहन में इस कदर बैठ गया था कि जनरल डायर को 1940 ई. में मदन लाल ढ़ींगरा ने लंदन में जाकर गोली मार दी।
   - **संदर्भः अतीत से वर्तमान भाग 3, अध्याय 12** पृष्ठ 199 से जोड़कर बच्चों को बतायें।

2. **झंडा सत्याग्रह–** झंडा सत्याग्रह का प्रारंभ 13 अप्रैल, 1923 ई. से शुरू हुआ जब अंग्रेजी प्रशासन ने लोगों को झंडा लेकर चलने से रोक दिया। कांग्रेसियों ने हुक्म मानने से इंकार करते हुए नागपुर में सत्याग्रह करने का निश्चय किया।
   - **संदर्भः अतीत से वर्तमान, भाग 3, अध्याय–12,** पृष्ठ 201 के संदर्भ में बच्चों से चर्चा करें।

3. **खालसा पंथ की स्थापना–** सिक्खों के दसवें गुरू गुरू गोविन्द सिंह जी ने 13 अप्रैल, 1699 ई. को खालसा पंथ की स्थापना की थी।

Saturday

/teachersofbihar

Madhu priya

Teachers of Bihar

The change makers

दिवस विशेष

13 अप्रैल

मधु प्रिया

झंडा सत्याग्रह 13 अप्रैल

झंडा सत्याग्रह ध्वज सत्याग्रह भारत के स्वतन्त्रता संग्राम के समय का एक शान्तिपूर्ण नागरिक अवज्ञा आन्दोलन था जिसमें लोग राष्ट्रीय झण्डा फहराने के अपने अधिकार के तहत जगह-जगह झण्डे फहरा रहे थे। यह आन्दोलन 1923 में जबलपुर में बाबू कंछेदीलाल जैन (लाल बंगला वाले) द्वारा मुख्यतः हुआ किन्तु भारत के अन्य स्थानों पर भी अलग-अलग समय पर आन्दोलन हुए।भारत में, ध्वज सत्याग्रह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान शांतिपूर्ण नागरिक अवज्ञा का एक अभियान है जो राष्ट्रवादी झंडे को उछालने और भारत में ब्रिटिश शासन की वैधता को चुनौती देने के अधिकार और स्वतंत्रता का उपयोग करने पर केंद्रित है। राष्ट्रवादी झंडे के उछाल और नागरिक स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून। 1923 में नागपुर शहर में विशेष रूप से ध्वज सत्याग्रहों का आयोजन किया गया था, लेकिन भारत के कई अन्य हिस्सों में भी।भारतीय आजादी के लिए क्रांतिकारी आंदोलन और क्रांतिकारी गदर पार्टी के सदस्यों के साथ विशेष रूप से विद्रोह का एक राष्ट्रवादी कार्य था। बाल गंगाधर तिलक , बिपीन चंद्र पाल और लाला लाजपत राय जैसे राष्ट्रवादी नेताओं के उदय के साथ भारत के विद्रोह के इस तरह के कृत्यों ने मुद्रा भर ली।ध्वज सत्याग्रह एक शब्द था जिसे ध्वज की उछाल का वर्णन नागरिक स्वतंत्रता पर ब्रिटिश लगाए गए प्रतिबंधों और भारत में ब्रिटिश शासन की वैधता के खिलाफ एक विद्रोह के रूप में किया गया था। असहयोग आंदोलन (1920-1922) और नमक सत्याग्रह (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के राष्ट्रवादियों को कानून का उल्लंघन करने और गिरफ्तार करने या पुलिस के खिलाफ प्रतिशोध के विरोध के बिना झंडा उड़ाया गया।

पुण्यतिथि विशेष 13 अप्रैल

राकेश कुमार

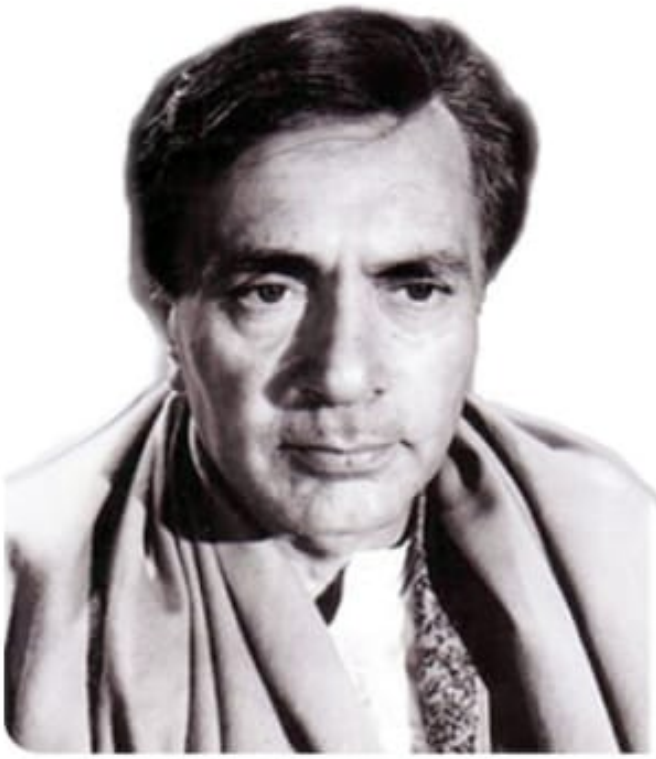

बलराज साहनी
1913-1973

बलराज साहनी *Balraj Sahni*, जन्म: 1 मई, 1913; मृत्यु: 13 अप्रैल, 1973) हिन्दी फ़िल्मों के प्रसिद्ध अभिनेता थे। उनका जन्म रावलपिंडी (पाकिस्तान) में हुआ था। बलराज साहनी ख्याति प्राप्त लेखक भीष्म साहनी के बड़े भाई व चरित्र अभिनेता परीक्षत साहनी के पिता थे। वे रंगमंच और सिनेमा की अप्रतिम प्रतिभा थे। बलराज साहनी को एक ऐसे अभिनेता के रूप में जाना जाता था, जिन्हें रंगमंच और फ़िल्म दोनों ही माध्यमों में समान दिलचस्पी थी। उनकी सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि वे अपने सशक्त अभिनय से दर्शकों को पर्दे के पात्र से भावनात्मक रूप से जोड़ देते थे।

शिक्षा शब्दकोश

आज का शब्द 13.04.2024

आशुलिपि

आशुलिपि (Shorthand) लिखने की एक विधि है जिसमें सामान्य लेखन की अपेक्षा अधिक तीव्र गति से लिखा जा सकता है। इसमें छोटे प्रतीकों का उपयोग किया जाता है। आशुलिपि में लिखने की क्रिया आशुलेखन (stenography) कहलाती है। स्टेनोग्राफी से आशय है तेज और संक्षिप्त लेखन। इसे हिन्दी में 'शीघ्रलेखन' या 'त्वरालेखन' भी कहते हैं।

रोचक तथ्य/सामान्य ज्ञान

Rakesh kumar

नीता अंबानी (Nita Ambani) और रिलायंस फाउंडेशन ने मिलकर 18,000 बच्चों के लिए स्टेडियम में मुफ्त आईपीएल (IPL) मैच देखने का इंतजाम किया है।

TOB

राकेश कुमार

खेल कॉर्नर

अंतर्राष्ट्रीय खेल और ट्रॉफियां

ट्रॉफी/कप	खेल	पुरस्कार इन्हें दिया जाता है
फ़ीफ़ा वर्ल्ड कप	फुटबॉल	विजेता राष्ट्रीय फुटबॉल टीम
यूफ़ा चैम्पियन्स लीग	फुटबॉल	विजेता क्लब फुटबॉल टीम
ओलंपिक स्वर्ण पदक	विभिन्न खेल	विजेता व्यक्ति/टीम
विंबलडन ट्रॉफी	टेनिस	व्यक्तिगत टेनिस खिलाड़ी विजेता
स्टेनली कप	आइस हॉकी	विजेता क्लब आइस हॉकी टीम
एशेज ट्रॉफी	क्रिकेट	विजेता राष्ट्रीय क्रिकेट टीम
रग्बी विश्व कप	रग्बी	विजेता राष्ट्रीय रग्बी टीम
सुपर बाउल ट्रॉफी	अमेरिकी फुटबॉल	विजेता क्लब अमेरिकी फुटबॉल टीम

वी. आर. खानोलकर

की जयंती पर सादर नमन।

जन्म- 13 अप्रैल 1895 - मृत्यु- 29 अक्टूबर 1978

www.teachersofbihar.org

मधु प्रिया

13 अप्रैल 2024

Teachers of Bihar

The Change Makers

आज का सुविचार

यदि आप सभी त्रुटियों के लिए दरवाजा बंद करते हैं, तो सच्चाई बंद हो जाएगी।

रवींद्रनाथ टैगोर

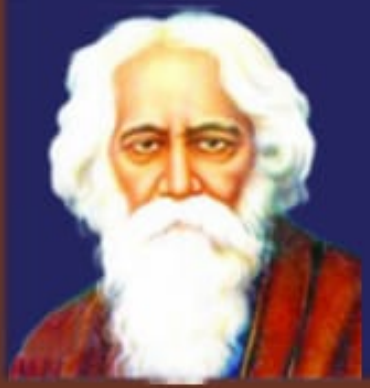

राकेश कुमार